9

''कुछ भले लोग''

(फिलिप्पियों 2:19-30)

यूएस मरीन कोर्पस (अमेरिका की शस्त्र सेनाओं की एक शाखा) का विज्ञापन है कि इसे ''कुछ अच्छे लोगों की'' तलाश है। ''कुछ अच्छे लोगों'' की तलाश सेना की इस शाखा से ही आरम्भ या खत्म नहीं हुई। एक पुराने दार्शनिक की कहानी बताई जाती है, जो जगी हुई लालटेन लेकर दिन दोपहर को ''कभी यहां, कभी वहां झांकता हुआ चल रहा था।''[1] जब किसी ने पूछा कि क्या कर रहे हो तो उसका उत्तर था, ''मैं एक ईमानदार आदमी को ढूंढ़ रहा हूं।''[1] प्रभु ने यहेजकेल नबी को बताया, ''मैंने ... ऐसा मनुष्य ढूंढ़ना चाहा, जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसको नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला'' (यहेजकेल 22:30)। प्रभु की कलीसिया के साथ पचास से अधिक वर्षों से काम करने वाला होने के कारण मेरा मानना है कि हमारी सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक ''कुछ अच्छे लोग'' ही हैं। (स्त्रियों का भी बहुत महत्व है; क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि पुरुष प्रभु की कलीसिया में अगुआई करें, इस कारण कई बार मसीही पुरुषों को उस ज़िम्मेदारी को सम्भालने के लिए कहना आवश्यक होता है, जो परमेश्वर ने उन्हें दी है।) फिलिप्पियों 2:19-30 में हमें दो जनों यानी तीमुथियुस इपफ्रुदीतुस के बारे में पढ़ते हैं।

अब तक अध्ययन किए गए वचन में, पौलुस ने कई बार कहा कि उसकी मृत्यु हो सकती है। उसने अपने जीवन के ''बलिदान और सेवा के साथ अपना लहू'' बहने की बात की (2:17)। उसने इस बात को समझा कि इस सम्भावना से उसके पाठकों को दुख पहुंचेगा सो उसने उन्हें सांत्वना देने की इच्छा की। ऐसा करने का उसका एक ढंग उन्हें उनके पास दो अच्छे लोगों को जिनमें से एक (इपफ्रुदीतुस) को तो तुरन्त और दूसरे (तीमुथियुस) को थोड़ी देर बाद उनके पास भेजने की अपनी योजनाओं को बताना था। अपनी योजनाओं की रूपरेखा बनाते हुए प्रेरित ने इन सहकर्मियों के स्वभाव पर टिप्पणी की। उसकी टिप्पणियों से हमें पता चलता है कि परमेश्वर अपनी सेवा में किस प्रकार के लोगों का इस्तेमाल कर सकता है।

कई बार हम ''मर्द आदमी'' जैसी अभिव्यक्ति सुनते हैं, जो आमतौर पर ''यह काम कोई मर्द ही कर सकता है'' या ''मर्द आदमी ऐसा नहीं करेगा'' जैसे शब्दों के साथ सुनते हैं। ''मर्द आदमी'' की संसार की परिभाषा हर देश में अलग-अलग है। कई बार यह देश के भीतर इलाके से इलाके में और शहरी से देहाती इलाकों में अलग होती है। आप चाहे जहां भी रहते हों ''मर्द आदमी'' होने के लिए संसार की शर्त परमेश्वर की शर्त की तरह नहीं है। इस पाठ में हम जानेंगे कि परमेश्वर ''कुछ अच्छे लोगों'' की खोज में है, जो *परवाह* करने वाले और *हिम्मत* वाले हों।

परवाह करने वाला आदमी (2:19-24)

व्यक्ति

पौलुस ने पहले तीमुथियुस की बात की (आयत 19)। पौलुस के लिए तीमुथियुस से बढ़िया कोई नहीं था। इस युवा इवैंजलिस्ट का नाम उसके पत्रों में पच्चीस से अधिक बार मिलता है। पौलुस ने उसे सम्भवतया उसकी युवा-अवस्था के समय परिवर्तित किया था (देखें 1 कुरिन्थियों 4:17) और बाद में उसे अपनी मिशनरी यात्राओं पर अपने साथ ले जाने के लिए भर्ती कर लिया (प्रेरितों 16:1-4)। अब तीमुथियुस रोम में पौलुस के काम में उसकी सहायता करते हुए (फिलिप्पियों 1:1) उसके साथ था।

तीमुथियुस के विषय में पौलुस ने लिखा कि फिलिप्पी के लोगों ने ''उसको परखा'' और उसे जानते थे (2:22क)। तीमुथियुस कई अवसरों पर फिलिप्पी में रहा था (देखें प्रेरितों 16:1, 3, 12; 19:22; 20:3, 4; 2 कुरिन्थियों 1:1; 2:13; 9:2, 4. फिलिप्पी ''मकिदुनिया का एक नगर'' था; प्रेरितों 16:12)। फिलिप्पी के मसीही उसे जानते थे और उसका आदर करते थे। पौलुस ने कहा कि उन्हें मालूम है कि ''जैसा पिता-पुत्र के साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया'' (फिलिप्पियों 2:22)। तीमुथियुस विश्वास में पौलुस का पुत्र था (1 कुरिन्थियों 4:17; 1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2; 2:1)। उन्होंने कई साल तक कंधे से कंधा मिलाकर सेवा की थी और जवान इवैंजलिस्ट पौलुस का हरमन प्यारा था।

योजना

अब पौलुस ने अपने साथ काम करने वाले को फिलिप्पियों के पास भेजने की योजना बनाई: ''मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा'' (2:19क)। तीमुथियुस के लिए पौलुस द्वारा उसको अपने दूत के रूप में भेजा जाना नया नहीं था (देखें 1 कुरिन्थियों 4:17; 16:10, 11; 1 थिस्सलुनीकियों 3:6)।

फिलिप्पियों के पास तीमुथियुस को भेजने के पौलुस के दो कारण थे। पहला वह पौलुस की पेशी के बारे में उन्हें जाकर बता सकता था: ''सो मुझे आशा है कि ज्यों ही मुझे जान पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी, त्यों ही मैं उसे तुरन्त भेज दूंगा'' (फिलिप्पियों 2:23)। पौलुस ने छूट जाने की उम्मीद जताई: ''और मुझे प्रभु में भरोसा है, कि मैं आप भी शीघ्र आऊंगा'' (आयत 24)। तभी उसे यह समझ थी कि यह पक्का नहीं था (1:20)। इस प्रकार उसने अपनी योजनाओं को ''प्रभु में'' शब्दों के साथ मिला लिया (2:19, 24)। सब कुछ परमेश्वर के हाथों में था और उसी की इच्छा पर था।

पौलुस तीमुथियुस को इसलिए भी भेज रहा था, ताकि वह फिलिप्पियों की खबर उसे आकर दे: ''मुझे ... आशा है, कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास ... भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले'' (आयत 19)। पौलुस ने फिलिप्पियों की ओर से मिलने वाली खबर को प्रोत्साहित करने वाली खबर होने की उम्मीद की और उसने उन से भी ऐसा ही कहा। प्रचार करने वाले नायकों में से एक क्लविस रोड्स कहा करते थे, ''लोग उतने ही अच्छे होंगे, जितने

आप उन से अच्छा होने की उम्मीद करते हैं।''

व्यक्तित्व

पौलुस ने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए तीमुथियुस को क्यों चुना? उसने लिखा, ''क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे'' (आयत 20)। अनुवादित शब्द ''ऐसे स्वभाव'' का यूनानी (*isopsuchon*) मिश्रित शब्द है, जो ''प्राण'' (*psuche*) के लिए शब्द के साथ ''बराबर'' (*iso*) के लिए शब्द को मिलाता है। इसका अर्थ ''बराबर सोच'' या ''एक जैसे मन'' वाले होना है। KJV में ''एक सोच वाले'' है। ''एक जैसे मन'' वाले मित्र या सहकर्मी को पाना विशेष बात है। मुझे दाऊद और योनातान का स्मरण आता है: ''योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने लगा'' (1 शमुएल 18:1)। फिलिप्पियों 2:20 में ''ऐसे स्वभाव'' का अर्थ है कि तीमुथियुस के मन में फिलिप्पियों के लिए वही प्रेम और लगाव था, जो पौलुस को था गया। क्या ''मर्द लोगों'' के अन्दर भावनाएं होती हैं? क्या ''मर्द लोग'' परवाह करते हैं? पौलुस के अनुसार, हां करते हैं!

कइयों को आश्चर्य हुआ है कि पौलुस ने यह क्यों कहा कि उसके पास ''ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से [फिलिप्पियों की भलाई] की चिंता करे।'' बीच-बीच में लूका, यूहन्ना, मरकुस और तुखिकुस और इपफ्रास सहित रोम में पौलुस के साथ अन्य सहकर्मियों ने काम किया था (प्रेरितों 27:1; 28:14-16; इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 1:7, 8; 4:7, 8, 12, 14; फिलेमोन 23, 24)। निश्चय ही पौलुस ने इन लोगों पर परवाह न करने का आरोप नहीं लगाया होगा। सम्भवतया पौलुस के फिलिप्पियों के नाम पत्र लिखने के समय नगर में इन में से कोई नहीं था। यानी वे अन्य मिशनों पर भेजे गए थे। बेशक वचन को वफ़ादारी से सुनाने वाले और लोग रोम में रहते थे (देखें फिलिप्पियों 1:14-16); तो उनके बारे में क्यों नहीं लिखा गया? शायद पौलुस के कहने का अर्थ पत्र के लिखे जाने के समय से था कि मैं ''और किसी के बारे में नहीं'' जानता, जो जाने के योग्य हो यानी जो ऐसा सफ़र कर सके और जो जाने को *तैयार* भी हो।

कोई प्रेरित की बातों का जो भी अर्थ निकाले पर वे तीमुथियुस की सिफ़ारिश और उस समय और आज के मसीही लोगों पर अभियोग पत्र है। ड्वाइट पैंटिकॉस्ट ने लिखा है,

> संतों को सिखाया जाना आवश्यक है। कोई परवाह नहीं करता। घायल मनों की पट्टी की जानी आवश्यक है। कोई परवाह नहीं करता। ऐसे लोग हैं, जिनके पास मसीह को पहुंचना आवश्यक है। कोई परवाह नहीं करता। बच्चे हैं जिन्हें प्रभु की बातों की शिक्षा और प्रशिक्षण तथा अगुआई दी जानी आवश्यक है, पर कोई परवाह नहीं करता।[2]

रोम के मसीही लोगों को फिलिप्पियों की परवाह क्यों नहीं थी? योग्य लोग फिलिप्पी में जाने को तैयार नहीं थे। ''क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की'' (आयत 21)। रोम में मसीही लोगों की अपनी दिनचर्या में से वहां से सात सौ मील दूर एक छोटी सी रोमी कॉलोनी के प्रति उनकी कोई दिलचस्पी नहीं होगी। यदि फिलिप्पी में जाने की आवश्यकता बताई गई होगी तो मैं कुछ लोगों के इस प्रकार से प्रतिक्रिया देने की कल्पना कर सकता हूं, ''हम फिलिप्पी की चिन्ता क्यों करें? हमारे यहां की इतनी आवश्यकताएं हैं कि हम

उसे पूरा नहीं कर पाते!'' ऐसी सोच ने सुसमाचार प्रचार और मिशन कार्य को पूरे संसार में ठेस पहुंचाई है। समय बीतने पर स्वार्थी मन और स्वार्थी होता जाता है:

- ''मैं संसार की परवाह क्यों करूं, जबकि मेरे अपने देश में इतनी ज़रूरतें हैं।''
- ''मैं देश की चिन्ता क्यों करूं, जबकि मेरे अपने नगर में जहां मैं रहता हूं इतनी ज़रूरतें हैं?''
- ''मैं नगर की जहां मैं रहता हूं, परवाह क्यों करूं, जबकि मेरी अपनी मण्डली में जहां मैं आराधना करता हूं, इतनी ज़रूरतें हैं?''
- ''मैं मण्डली के और लोगों की परवाह क्यों करूं, जबकि *मेरी* अपनी इतनी ज़रूरतें हैं।''

पौलुस द्वारा बताई गई सोच ''क्योंकि सब लोग अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं न कि यीशु की'' से बढ़कर सुसमाचार के प्रसार ने किसी और बात में रुकावट नहीं डाली है। मैंने एक कलीसिया के बारे में पढ़ा, जिसके बाहर बोर्ड पर सामने ''JESUS ONLY'' (केवल यीशु) लिखा था। एक तूफ़ान के आ जाने से उस बोर्ड के पहले तीन अक्षर उतर गए और वहां केवल ''US ONLY'' (केवल हम) रह गया।[3] दुख की बात है कि वे शब्द कुछ बयान करते हैं। पौलुस ने हमें यह चुनौती दी: ''कोई अपनी भलाई को न ढूंढ़े, वरन औरों की'' (1 कुरिन्थियों 10:24)। यह ऐसी चुनौती थी, जिसका सामना करने की उसने स्वयं कोशिश की: उसने ''अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ा कि वे उद्धार पाएं'' (1 कुरिन्थियों 10:33)। हमें ऐसे पुरुषों और ऐसी स्त्रियों की आवश्यकता है जो *परवाह* करते हों। जो घर में और बाहर लोगों की आवश्यकताओं से लगाव रखते हों और जो उन आवश्यकताओं को कम करने के लिए, जो भी कर सकते हों, करने को तैयार रहें। जब मैं मिशनरी था तो मैं कई भावी मिशनरियों से बात करता था जिनकी निजी दिलचस्पी उन्हें मिशन कार्य के उनके सपनों को पूरा करने से दूर रखती थी।

एक आदमी जिसने हिम्मत की (2:25-30)

पौलुस तीमुथियुस को भेजना चाहता था पर अपनी पेशी से पहले पहले। फिलिप्पी को जाने के लिए तुरन्त किसी और की आवश्यकता थी। पौलुस की पहली योजना इपफ्रुदीस को भेजने की थी।

उसकी सेवा

फिलिप्पियों की पुस्तक बाइबल में एकमात्र जगह है, जहां हमें इपफ्रुदीतुस के बारे में पढ़ने को मिलता है। परन्तु उसका संक्षिप्त चित्रण यहां उसके परमेश्वर का शानदार सेवक होने को दिखाता है। उसे ''वह नाम मिला था, जो प्राचीन साहित्य में, कई बार संक्षिप्त रूप में इपफ्रास के रूप में आम इस्तेमाल होता था और बार-बार आता था।''[4] (परन्तु आम तौर पर यह माना जाता है कि यह इपफ्रुदीतुस कोलोस्से का सदस्य इपफ्रास नहीं था [देखें कुलुस्सियों 1:7; 4:12; फिलेमोन 23])। यह एक यूनानी नाम था, जिसका अर्थ ''मनोहर'' था। किसी भी दृष्टिकोण से इपफ्रुदीतुस ''मनोहर'' व्यक्ति ही लगता होगा।

फिलिप्पी की कलीसिया ने रोम में पौलुस के पास सहायता भेजी थी (देखें 1:5)। मकिदुनिया की अन्य मण्डलियों की तरह फिलिप्पी की कलीसिया भी गरीब ही होगी (देखें 2 कुरिन्थियों 8:1, 2; प्रेरितों 16:12)। परन्तु यह पता चलने पर कि पौलुस कहां है उन्होंने उसके लिए धन इकट्ठा करने के लिए बलिदान किया। उस चंदे को लेकर जाने के लिए चुना गया व्यक्ति इपफ्रुदीतुस था (फिलिप्पियों 4:18)।

2:25 में इपफ्रुदीतुस को ''तुम्हारा दूत'' कहा गया है। अनुवादित शब्द ''दूत'' (यू.: *apostolon*) से ही हमें प्रेरित के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''*apostle*'' मिला है। यह एक मिश्रित शब्द है, जो क्रिया रूप में, ''भेजना'' (*stello*) के लिए शब्द के साथ ''से'' (*apo*) के अर्थ वाले पूर्वसर्ग को मिलाता है। इसके संज्ञा रूप का अर्थ है ''भेजा हुआ।'' नये नियम में इसका इस्तेमाल यीशु द्वारा *भेजे गए,* बारह (देखें मत्ती 10:2; प्रेरितों 1:2, 26; 2:42, 43) और पौलुस (देखें रोमियों 1:1; 11:13; गलातियों 1:1, 17) के अर्थ में मुख्य रूप से किया जाता है। गौण अर्थ में इसका अर्थ मण्डली द्वारा ''भेजे गए'' लोगों के लिए है (देखें प्रेरितों 14:14; रोमियों 16:7; 2 कुरिन्थियों 8:23)। फिलिप्पियों 2:25 में इसका अर्थ ''तुम्हारा भेजा हुआ'' है। यह तथ्य कि उन्होंने इपफ्रुदीतुस को भेजा था उसमें उनके विश्वास का संकेत देता है। कई लेखक अनुमान लगाते हैं कि इपफ्रुदीतुस फिलिप्पी की मण्डली का ऐल्डर का रूप है। (वह दोनों में कुछ भी हो सकता है पर वचन ऐसा नहीं बताता)

रोम में पहुंचकर इपफ्रुदीतुस दान सौंपे बिना तुरन्त फिलिप्पी में लौट गया। इसके बजाय वह कैदी प्रेरित की सहायता के लिए ठहरा रहा। पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया कि वह ''आवश्यक बातों में मेरी सेवा टहल करने वाला'' तुम्हारा दूत है (आयत 25)। ''सेवा टहल करने वाला'' के लिए शब्द *diakonos* नहीं बल्कि *leitourgos* का एक रूप है। विलियम बार्कले की व्याख्या है:

> सेक्युलर यूनानी भाषा में यह ज़बर्दस्त शब्द था। यूनानी नगरों में प्राचीनकाल में ऐसे पुरुष होते थे जो, अपने नगर से इतना अधिक प्रेम रखने के कारण ''अपने खर्च पर कुछ बड़े कर्त्तव्य उठाते थे।'' यह किसी दूतावास के खर्च को अदा करने, या बड़े कवियों के किसी नाटक का खर्च डालने, या धावकों के प्रशिक्षण का जो खेलों में नगर का प्रतिनिधित्व करता हो, या राज्य की नौसेना में सेवा करने के लिए युद्धपोत की मुरम्मत करने और नाविक दल का खर्च उठाना होता था। ये लोग राज्य के बड़े संरक्षक होते थे और उन्हें *leitourgoi* कहा जाता था।[5]

इपफ्रुदीतुस फिलिप्पियों की ओर से पौलुस का संरक्षक था। आयत 30 कहती है कि उसने प्रेरित के लिए फिलिप्पियों की सेवा में ''जो घटी'' थी, उसे पूरा किया। ''अंग्रेजी भाषा में [''what was deficient''] वाक्यांश बहुत हद तक डांट जैसा लगता है। चाहे यूनानी भाषा में ऐसा कुछ नहीं रहता।''[6] फिलिप्पियों में ''घटी'' केवल एक बात की थी कि वे रोम में पौलुस के साथ नहीं हो पाए थे। अगले अध्याय में पौलुस ने कहा, ''... तुम्हें आरम्भ में भी इस का विचार था, पर तुम्हें अवसर न मिला'' (4:10)। उनकी ''घटी'' को उनके प्रतिनिधि इपफ्रुदीतुस ने पूरा कर दिया। CJB में इसका अनुवाद है कि उसने पौलुस को ''वह सहायता दी, जो वे स्वयं

देने की स्थिति में नहीं थे।''

तो फिर इपफ्रुदीतुस ने विशेष रूप में क्या किया? हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि वह प्रचारक या शिक्षक हो। इसके बजाय वह ''सेवा टहल करने वाला यानी पौलुस की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक सेवक था।'' वे सेवाएं कुछ भी हो सकती हैं। प्रेरित बुजुर्ग था, जिसे ज़ंजीरों और एक सुरक्षा कर्मचारी के साथ बांधकर रखा गया था (फिलेमोन 9; इफिसियों 6:20)। किसी को उसके लिए खाना खरीदना और बनाना आवश्यक था। किसी को उसका ध्यान रखना आवश्यक था कि वह क्या पहने। किसी को उसकी जगह की साफ़ सफ़ाई करनी थी। किसी को उसके ''शरीर में कांटा'' (2 कुरिन्थियों 12:7) होने पर जो उसे बिस्तर पर लेटने को विवश करता होगा, उसकी देखभाल करनी आवश्यक थी। (मैं यह कल्पना कर रहा हूं कि पौलुस के ''शरीर में कांटा'' शारीरिक पीड़ा ही थी।) कई बार पौलुस को अपनी संगति के लिए किसी की आवश्यकता होती होगी। इन आवश्यक कामों के अलावा, भागने के लिए संदेशवाहकों, देने के लिए संदेशों और भेजे जाने के लिए निमन्त्रण भी होंगे।

हम पक्का नहीं जानते कि इपफ्रुदीतुस ने कितनी देर तक सेवाएं दीं पर ये सेवाएं कई महीनों तक की होंगी। कई बार पहुंचने के बाद वह बीमार पड़ जाता था। उसकी बीमारी की खबर फिलिप्पी में पहुंचती। फिर फिलिप्पी से खबर आती कि वहां के मसीही लोग उसकी बीमारी के बारे में जानते हैं। उस समय यातायात धीमा था इस कारण फिलिप्पी तक खबर पहुंचने और वहां से खबर लाने में समय लग जाता होगा। इस दौरान इपफ्रुदीतुस ने पौलुस की आवश्यकताओं की सेवा टहल के लिए *जो भी आवश्यक था किया।*

किसी को इपफ्रुदीतुस के कर्त्तव्य सामान्य और महत्वहीन लग सकते हैं, पर पौलुस ने कहा कि वह ''मसीह के काम'' को कर रहा था (फिलिप्पियों 2:30)। इस आदमी और उसकी सेवकाई के पौलुस के अवलोकन पर ध्यान दें। उसने उसे ''मेरा भाई, और सहकर्मी और संगी योद्धा'' कहा (आयत 25)।

प्रभु के लिए किया गया कोई भी कार्य महत्वपूर्ण है। प्रचार करना, सिखाना और आराधना में अगुआई करना महत्वपूर्ण कार्य हैं, पर इतना ही महत्वपूर्ण किसी भाई या बहन को प्रोत्साहित करना, दुखी को दिलासा देना और बीमार के लिए खाना ले जाना है (देखें मत्ती 10:42; 25:31-46)। हमें और ऐसे मसीही लोगों की आवश्यकता है जो किसी भी रूप में सेवा को तैयार रहें यानी वे छोटे से छोटे काम करने को तैयार हों, ताकि प्रभु का काम बढ़ सके।

उसका बलिदान

इपफ्रुदीतुस ने अपनी सेवा की कीमत चुकाई। वह बीमार हो गया। आयत 26 कहती है, ''तुम ने उसकी बीमारी का हाल सुना था।'' आयत 27 कहती है, ''निश्चय वह बीमार तो हो गया था, यहां तक कि मरने पर था।'' मैं उसके मित्रों और साथियों को रोम में उसके बिस्तर के पास सिर हिलाते और यह कहते हुए देख सकता हूं, ''शायद ही रात निकाल पाए।'' किसी प्रकार से उसकी बीमारी उसके काम से जुड़ी हुई थी। आयत 30 कहती है, ''वह मसीह के काम के लिए अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मरने के निकट हो गया था।''

फिलिप्पियों की पुस्तक पर लिखना आरम्भ करने से कई महीने पहले मैंने अपनी पत्नी जो

के साथ इस पुस्तक को पढ़ना आरम्भ किया। शाम को खाने के बाद हर रात हम एक अध्याय पढ़ लेते। हमने कई अनुवादों का इस्तेमाल किया। इपफ्रुदीतुस के ''अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मरने के निकट'' होने की बात ने मुझे आकर्षित किया। जब भी हम इन शब्दों को पढ़ते हैं, वह पूछता, ''अपनी जान जोखिम में डालने वाले इपफ्रुदीतुस ने कौन सी बात *की?*'' मामले का अध्ययन करने के बाद मैं आज भी पक्का नहीं कह सकता, पर कुछ अनुमान हैं जो टीकाकारों द्वारा बताए गए हैं:

- सात सौ मील का रोम का सफ़र, वह भी धन लेकर, बड़ा जोखिम भरा होगा। रास्ते में इपफ्रुदीतुस पर हमला हुआ हो सकता है; लूका 10:30 दिखाता है कि हमले होना आम बात थी। यदि उस पर हमला हुआ तो इपफ्रुदीतुस ने पौलुस के लिए दिए गए दान को किसी न किसी तरह सम्भाल लिया।
- उस ज़माने में सफ़र करना बीमारी के कारण भी जोखिम भरा था। हो सकता है कि इपफ्रुदीतुस को रास्ते में किसी से यह व्याधि हो गई हो।
- शायद यह जोखिम रोम में सेवा टहल करने से हुआ। भीड़-भाड़ वाले महानगरों के क्षेत्रों में बीमारी जल्दी फैलती है। प्राचीन लेखक ऐसे ज्वरों की बात बताते हैं, जो पूरे रोम में महामारी की तरह फैलते थे।
- हो सकता है कि यह जोखिम अपने प्राण जीने के लिए मुकदमा लड़ रहे आदमी के साथ होने का हो। पौलुस पर विद्रोह का आरोप था और रोमी लोगों के लिए इससे बड़ा अपराध कोई नहीं था। ''मृत्यु दण्ड की प्रतीक्षा कर रहे व्यक्ति के निजी सहायक के रूप में अपने आप को देने की पेशकश करने वाला कोई भी व्यक्ति अपने प्राण को उसी जोखिम में डाल रहा था जिसका आरोप उसके सिर था।''[7]
- पौलुस की कुछ बातों को मानना जोखिम भरा हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि पौलुस ने उसे बीमारों की सेवा टहल के लिए कहा हो। आरम्भिक कलीसिया में अपनी जान का जोखिम उठाकर बीमारों की देखभाल करने वालों को (*parabolani*) कहा जाता था, जो इस पद्य में [''जोखिम लेना''] शब्द का एक रूप है, जिसका अर्थ मूलतया ''लापरवाह व्यक्ति'' है।[8]
- शायद उसने अपने आपको अधिक ही फैला लिया था। यदि हमारा अनुमान सही है कि पौलुस के सहकर्मी, इपफ्रुदीतुस के अलावा, नगर से बाहर थे तो उसने तीन लोगों का काम करने की कोशिश की हो सकती है।

हमें संक्षेप में तो पता नहीं है कि इपफ्रुदीतुस की बीमारी का क्या कारण था पर हम इतना जानते हैं कि उसने प्रभु के लिए अपना प्राण जोखिम में डाल दिया। ''जोखिम में डालना'' शब्द (यूनानी भाषा के शब्द *paraboleumai* के एक रूप का अनुवाद) दिलचस्प है। पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द ''फैंकना'' (*ballo*) के लिए शब्द के साथ ''के साथ-साथ'' (*para*) के लिए शब्द को मिलाता है। इसका अर्थ ''खतरे के लिए अपने आपको सामने लाना'' है। लेखक ध्यान दिलाते हैं कि इस शब्द का इस्तेमाल जुए के एक शब्द के रूप में होता था। इसका अर्थ यह नहीं है कि बाइबल जुए की अनदेखी करती है। जुआ खेलना यानी बिना मेहनत किए

लाभ पाने की उम्मीद से धन दाव पर लगाना? बाइबल की कई आयतों और नियमों द्वारा विरोध किया गया (तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 3:10; इफिसियों 4:28; गलातियों 6:7)।[9] इसका अर्थ यह है कि इपफ्रुदीतुस ने मसीह के काम को अपनी सुरक्षा से अधिक महत्वपूर्ण माना।

मैंने छह साल की एक लड़की के बारे में पढ़ा था, जिसे जीवित रहने के लिए खून बदलने की आवश्यकता थी।[10] उसका ब्लड ग्रुप अलग ही किस्म का था और उसका एकमात्र उपलब्ध डोनर उसका नौ वर्षीय भाई था। वह अपनी बहन को बचाने के लिए अपना लहू निकलवाने के लिए सहमत हो गया। जब उसका लहू निकाला जा रहा था, तो उसने टेक्नीशियन की ओर ऊपर को देखते हुए पूछा, ''मैं कब मरूंगा?'' उसके मन में यह था कि खून देने से उसकी मौत हो जाएगी, पर वह अपना बलिदान देने को तैयार था, ताकि उसकी बहन जीवित रह सके। ऐसे लोगों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद जो अपनी जान जोखिम में डालने की ऐसे हिम्मत करते हैं जैसे यह प्रभु का काम हो। जिससे प्रभु का काम बना रहे और बढ़ता रहे। यूहन्ना ने लिखा, ''हमने प्रेम इसी से जाना कि उस [यीशु] ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए'' (1 यूहन्ना 3:16)।

उसकी स्थिति

इपफ्रुदीतुस मसीह के प्रति अपने समर्पण के कारण बीमार हो गया था। ''परन्तु'' पौलुस ने कहा, ''परमेश्वर ने उस पर दया की'' (आयत 27ख)। अन्य शब्दों में वह ठीक हो गया। हर प्रकार की चंगाई चाहे वह आज की गैर चमत्कारी चंगाई हो, प्रभु की ओर से ही होती है। पौलुस ने आगे कहा, ''और केवल उस पर ही नहीं, पर मुझ पर भी, कि मुझे शोक पर शोक न हो'' (आयत 27ग, घ)। ''शोक पर शोक'' मूल धर्मशास्त्र का अक्षरश: अनुवाद है। ''शोक पर शोक'' ''अत्यधिक शोक'' के अर्थ वाला अलंकारिक शब्द है। यदि हम इन शब्दों को अक्षरश: लें, तो हमारा ध्यान इपफ्रुदीतुस के पहले ''शोक'' पर जा सकता है। दूसरा ''शोक'' तब मिलना था यदि वह मर जाता।

इपफ्रुदीतुस के ठीक होने के बाद पौलुस चाहता होगा कि वह रोम में उसके साथ चले। परन्तु जैसा कि पहले ध्यान दिया गया है कि पता चल गया था कि फिलिप्पियों को उसकी बीमारी का पता चल गया है और इसने इपफ्रुदीतुस को परेशान कर दिया। पौलुस ने कहा, ''... उसका मन तुम सब में लगा हुआ है, इस कारण वह व्याकुल रहता था क्योंकि तुम ने उस की बीमारी का हल सुना था'' (आयत 26)। ''व्याकुल'' शब्द ''गतसमनी में प्रभु की मानसिक स्थिति के वर्णन के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द ही है'' (मत्ती 26:37)। यूनानी शब्द मूलतया बड़े दुख से चूर-चूर और परेशान होने को व्यक्त करता है।[11] LB के अनुवाद में ''उसे तुम सब की याद सताती है और यह जानकर कि तुम्हें पता है कि वह बीमार है, वह परेशान हैं।'' यदि आपको कभी घर की याद सताई हो और आप मित्रों और परिवार के लिए चिन्तित हुए हों तो आप समझ सकते हैं कि इपफ्रुदीतुस की भावना कैसी थी।

पौलुस ने निर्णय लिया कि इपफ्रुदीतुस को फिलिप्पी में वापस भेजना सबसे सही होगा। इससे उसका अपना जीवन कठिन हो जाना था पर इससे इपफ्रुदीतुस और फिलिप्पियों को तसल्ली मिलनी थी। उसने लिखा, ''इसलिए मैं ने उसे भेजने का और भी यत्न किया कि तुम उस

से फिर भेंट करके आनन्दित हो जाओ और मेरा भी शोक घट जाए'' (फिलिप्पियों 2:28)। ''सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन'' पौलुस को रहती थी (2 कुरिन्थियों 11:28)। इपफ्रुदीतुस को घर भेजने से उसे फिलिप्पी की कलीसिया की चिन्ता से कुछ राहत मिल जानी थी।

कई लेखकों का विचार है कि पौलुस ने ऐसा इसलिए लिखा क्योंकि फिलिप्पी के लोग इपफ्रुदीतुस के जल्दी वापस न आ पाने पर चिन्तित होंगे। मुझे इसका कोई प्रमाण दिखाई नहीं देता; मुझे केवल इपफ्रुदीतुस और फिलिप्पियों की मण्डली में एक निकट, हार्दिक और परवाह करने वाला सम्बन्ध दिखाई देता है। जो भी हो पौलुस ने यह ज़ोर देकर कि इपफ्रुदीतुस को घर भेजने का विचार *उसका* था, आलोचना की किसी भी सम्भावना को खत्म कर देगा।

इपफ्रुदीतुस के भाग की समाप्ति के लिए पौलुस ने ताड़ना की: ''इसलिए तुम प्रभु में उस से बहुत आनन्द के साथ भेंट करना, और ऐसों का आदर किया करना'' (फिलिप्पियों 2:29)। उन्हें उसका स्वागत एक नायक की तरह करना था! कोई विरोध कर सकता है, ''पर वह तो एक आम काम करने वाला साधारण मसीही था! उसे इतना सम्मान देने की क्या आवश्यकता है?'' क्योंकि वह उसे दिए गए काम में दिल से लगा रहा था।

पौलुस ने लिखा, ''हर एक का हक चुकाया करो, ... जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो'' (रोमियों 13:7)। संदर्भ में, रोमियों 13:7 में पौलुस के मन में सरकारी अधिकारियों का आदर करने की बात थी; परन्तु प्रासंगिकता दूसरों के लिए बनाई जा सकती है, जो आदर के हकदार हों। रोमियों 13:7 में ''आदर'' और फिलिप्पियों 2:29 में ''आदर'' शब्द एक ही मूल शब्द से अनुवाद किए गए हैं।

अफ़सोस की बात है कि हम हमेशा उन लोगों को मान्यता नहीं देते, जो ईमानदारी से सेवा करते हैं। इस लापरवाही का एक दुखद उदाहरण तब मिला, जब एक मिशनरी और उसकी पत्नी मिशन क्षेत्र में कई साल बिताने के बाद घर लौट रहे थे। उनके साथ जहाज में एक प्रसिद्ध धावक था। धावक को मिलने के लिए उसके प्रशंसकों की भीड़ थी पर मिशनरी का स्वागत करने वाला कोई नहीं था। मिशनरी की पत्नी ने अपने निराश पति को इन शब्दों के साथ तसल्ली दी: ''घर लौटने से कोई फर्क नहीं पड़ता।'' परमेश्वर का धन्यवाद हो कि एक दिन आएगा जब उसके लिए किया जाने वाले छोटे से छोटे काम के लिए भी तारीफ़ हो (मत्ती 25:31-46), परन्तु क्या यह अद्भुत बात होगी, जिसके लिए जीवन की तारीफ़ व्यक्त करें?

कोई और विरोध कर सकता है, ''पर हम लोगों को उनकी आत्मिक गतिविधि के लिए सम्मान देते हैं, तो इससे वे फूल जाएंगे!'' आवश्यक नहीं है। फिलिप्पियों के 2 अध्याय में पौलुस ने ''झूठी बढ़ाई'' (आयत 3) की निंदा की जबकि साथ ही किसी भाई का ''आदर किए जाने'' (आयत 29) को प्रोत्साहित किया। मैं अरल पामर के साथ सहमत हूं, जिसने लिखा:

> मुझे ऐसी किसी संगति का पता नहीं है, जो बहुत अधिक ''धन्यवाद'' कहने या एक दूसरे के प्रति लगाव दिखाने के कारण टूटी हो। परन्तु मुझे ऐसी कई कलीसियाओं और परिवारों का पता है जो इसके सदस्यों में पूरे लगाव की कमी के कारण सूखे और मुरझा जाते और टूट जाते हैं।[12]

बेशक कोई भी उस आदर का हकदार नहीं है जो केवल परमेश्वर को दिया जाना चाहिए,

परन्तु निश्चित रूप से ऐसा भी आदर है, जो मनुष्य का है।[13] पौलुस ने फिलिप्पियों 2:25-30 में इपफ्रुदीतुस का अवलोकन करके स्वयं उसे आदर दिया। ''प्रशंसा की ये बातें ...'' तब पढ़ी जाएंगी, जब लोग उन रोमी योद्धाओं के नाम तक भूल चुके होंगे, जिन्होंने कभी शहरपनाह के सामने जहां मसीह का यह दीन सेवक रहता था संसार के साम्राज्य के लिए लड़ाई की थी।[14] मसीही लोगों के रूप में हमें ''अत्यधिक मित्रता जो [दूसरों को] उनके महत्व का अहसास कराए और हमारे लिए उनकी कीमत का'' पेशकश करने के ढंग पता लगाने चाहिए।[15]

सारांश

फिलिप्पियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने निस्वार्थपन की आवश्यकता बताई (2:3, 4)। फिर उसने निस्वार्थपन का परम उदाहरण यीशु बताया (2:5-8)। फिर उसने मसीह की सोच वाले दो लोगों, तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस का उदाहरण दिया; कितने भले लोग थे; हमारे लिए कितने ज़बर्दस्त उदाहरण हैं।

कालांतर में यह चिह्न देखना आम बात थी, जिसमें कहा गया हो, ''पुरुषों की आवश्यकता है।'' आज, ऐसे चिह्न और सामान्य बन गए हैं ''सहायता की आवश्यकता है'' ''पुरुषों की आवश्यकता है'' शब्दों के साथ उनके काम का वर्णन भी होता है जिसके लिए उनकी आवश्यकता होती है। पुरुषों और स्त्रियों की आज भी ''आवश्यकता है'': तीमुथियुस जैसे मसीही लोगों की, जो दूसरों की बहुत परवाह करते हैं और इपफ्रुदीतुस जैसे मसीही लोगों की, जो अपनी जान जोखिम में डालकर उसकी सेवा करने की हिम्मत करते हैं।

टिप्पणियां

[1]जॉन बार्टलेट, *बार्टलेट'स फैमिलियर क्वोटेशंस,* 16वां संस्क., संपा. जस्टिन कैपलन (बोस्टन: लिटल, ब्राउन. एंड कं., 1992), 77. में उद्धृत, डायोजीन्स द साइनिक (लगभग 400 लगभग 325 ई. पू.)। [2]जे. डवाइट पैंटिकॉस्ट, *दि जॉय ऑफ़ लिविंग: ए स्टडी ऑफ़ फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 109. [3]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 82. [4]जॉन एफ़. वेलवूर्ड, *फिलिपियंस: ट्रायम्फ इन क्राइस्ट,* एवरीमैन'स बाइबल कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1971), 71. [5]विलियम बार्कले, *दि लैटर्स टू द फिलिपियंस, क्वोलोशियंस, थेस्सलोनियंस,* संशो. संस्क., दि स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 49. [6]पेट एडविन हैरल्ल, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू दि फिलिपियंस, द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़,* संपा. एवरेट फर्ग्यूसन (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 110. [7]बार्कले, 48. [8]जेम्स एम. टोले, *नोटस ऑन फिलिपियंस* (सेन फर्नैंडो, कैलिफोर्निया: टोले पब्लिकेशंस, 1972), 47. [9]एवन मेलोन, *प्रैस टू दि प्राइज़* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 70, एन 69. [10]इस कहानी का एक वृत्तांत चार्ल्स आर. स्विंडल, *लॉफ़ अगेन* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1992), 120-21 में है।

[11]टोले, 44. [12]एरल एफ़. पामर, इंटेग्रिटी इन ए वर्ल्ड प्रेटेंस: इनसाइड फ्रॉम दि बुक ऑफ़ फिलिपियंस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 118. [13]टोल, 46. देखें इफिसियों 6:2; 1 तीमुथियुस 5:17; 6:1; इब्रानियों 12:9; 1 पतरस 2:17; 3:1-7. [14]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *द एपिस्टल आफ़ पॉल टू दि फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1983), 105. [15]पामर, 117.